खलीफा हारून अलरशीद

के साहसिक कारनामे

सच या झूठ?

वैल बिरो

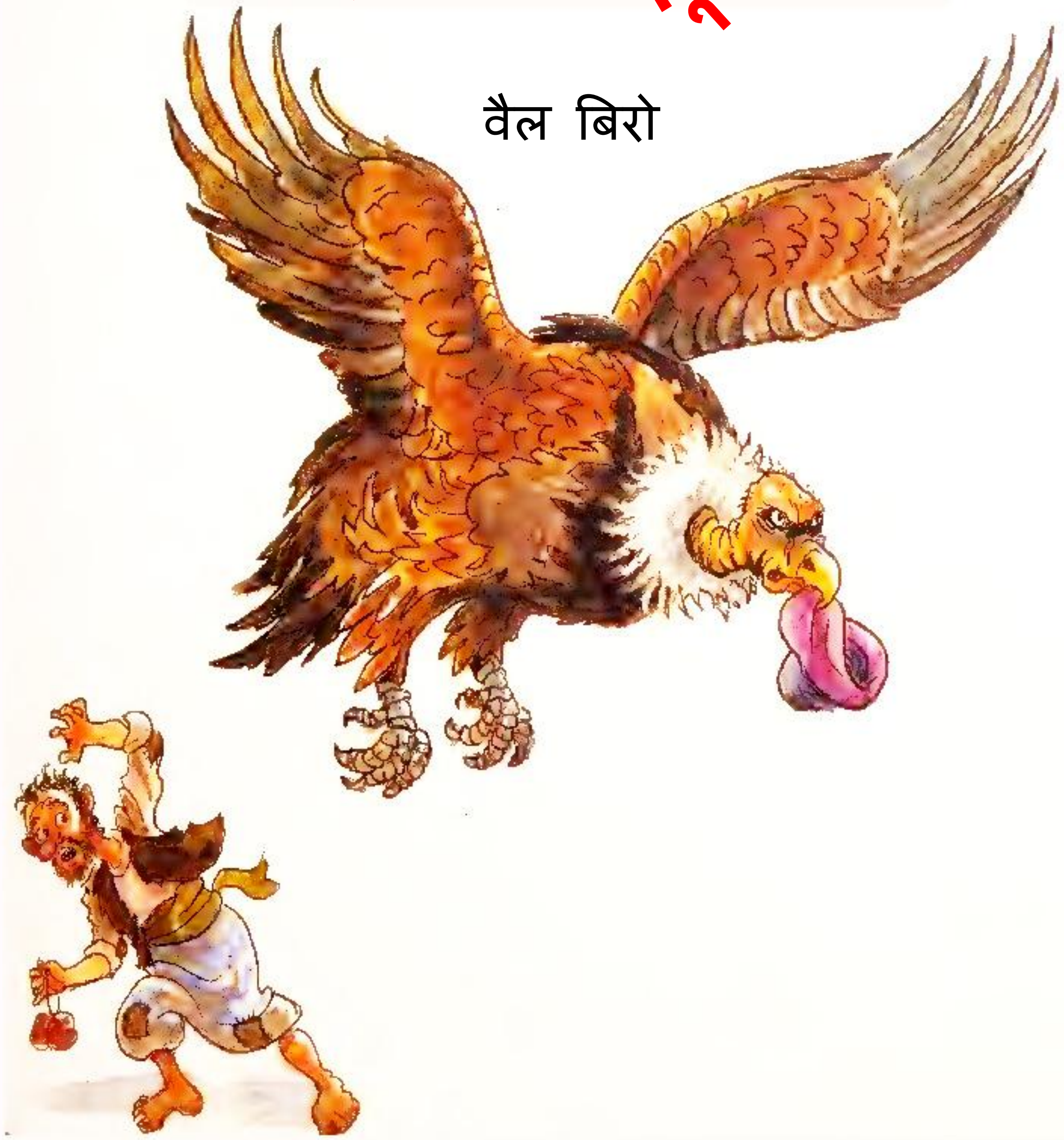

वो खलीफा हारून अलरशीद के बगदाद के मासिक दौरे का दिन था, और जब वह शहर में टहल रहे थे, तो उनकी नज़र एक शानदार हवेली पर पड़ी जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थी. वो अहमद नामक एक व्यापारी और रस्सी बनाने वाले की थी. खलीफा को आश्चर्य हुआ कि इतने छोटे पेशे वाला एक आदमी इतना भव्य नया घर कैसे खरीद सकता था.

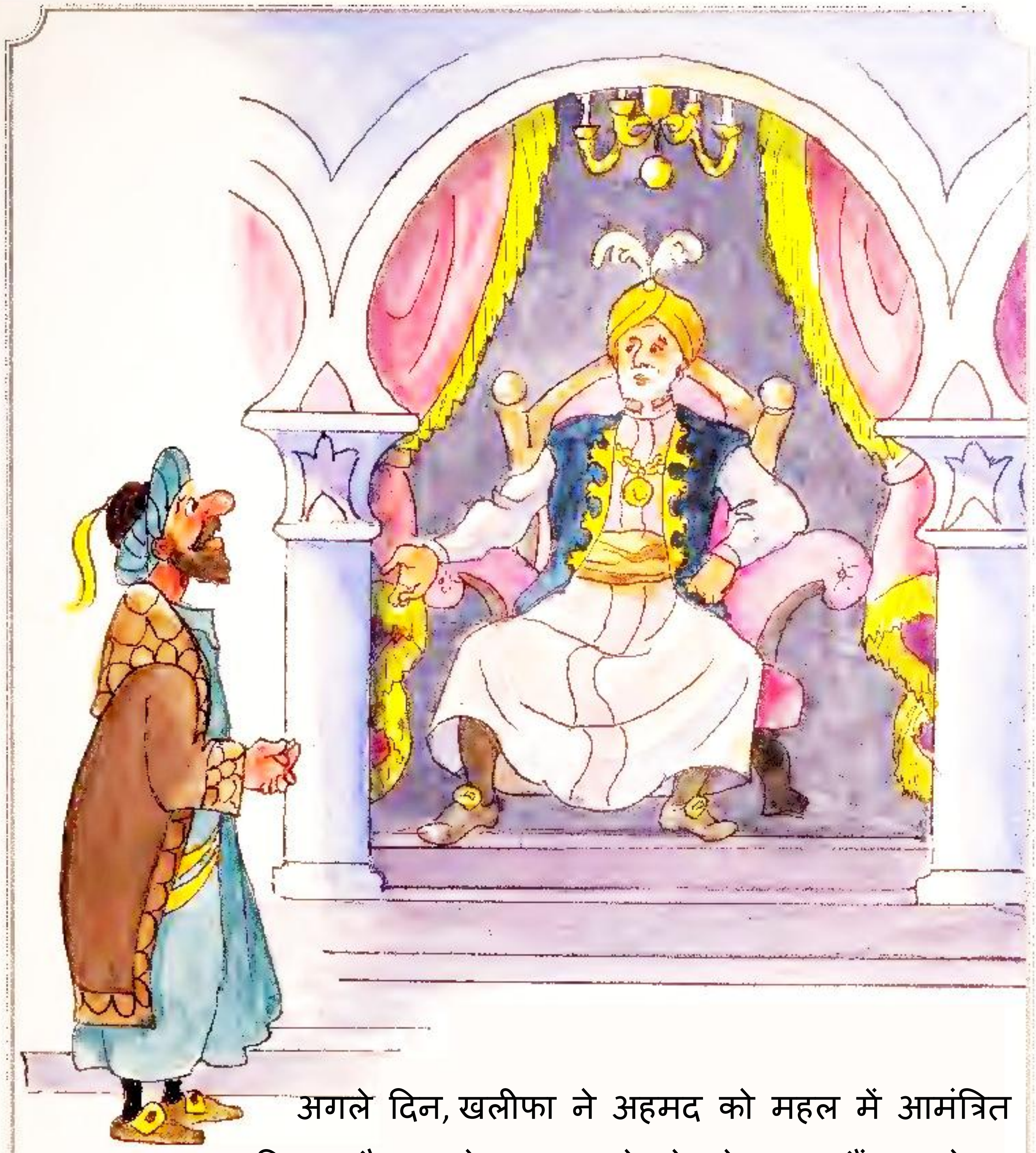

अगले दिन, खलीफा ने अहमद को महल में आमंत्रित किया और उससे खुलकर बोलने को कहा, "मैं तुम्हारे सौभाग्य पर प्रसन्न हूं, मुझे अपनी कहानी सुनाओ."

अहमद ने खलीफा को उनकी रुचि के लिए धन्यवाद दिया और अपनी कहानी सुनानी शुरू की:

महाराज, अहमद ने कहा, मैं अपने सौभाग्य का श्रेय साद और सादी नाम के दो सज्जनों को देता हूँ. वे अच्छे दोस्त थे, लेकिन अमीर बनने के बारे में दोनों की अपनी-अपनी धारणाएँ थीं.

सादी, जो अमीर था, कहता था कि अमीर बनने के लिए सबसे पहले तुम्हारे पास कुछ पैसा होना चाहिए, लेकिन साद का मानना था कि तुम्हें बस थोड़ी प्रतिभा और थोड़ी किस्मत की ज़रूरत है.

खैर, अहमद ने आगे कहा, एक दिन उन्होंने मुझे अपना काम करते हुए देखा, लेकिन मेरी उस समय की गरीबी को देखते हुए, ज़ाहिर है कि मुझे कोई सफलता नहीं मिल रही थी. "अहमद," सादी ने कहा, "मैं अपने दोस्त को एक बात साबित करना चाहता हूँ. ये 200 सोने के सिक्के लो और मुझे समय आने पर बताना कि तुमने इनका क्या उपयोग किया." और इससे पहले कि मैं उन्हें ठीक से धन्यवाद दे पाता, वे वहां से चले गए.

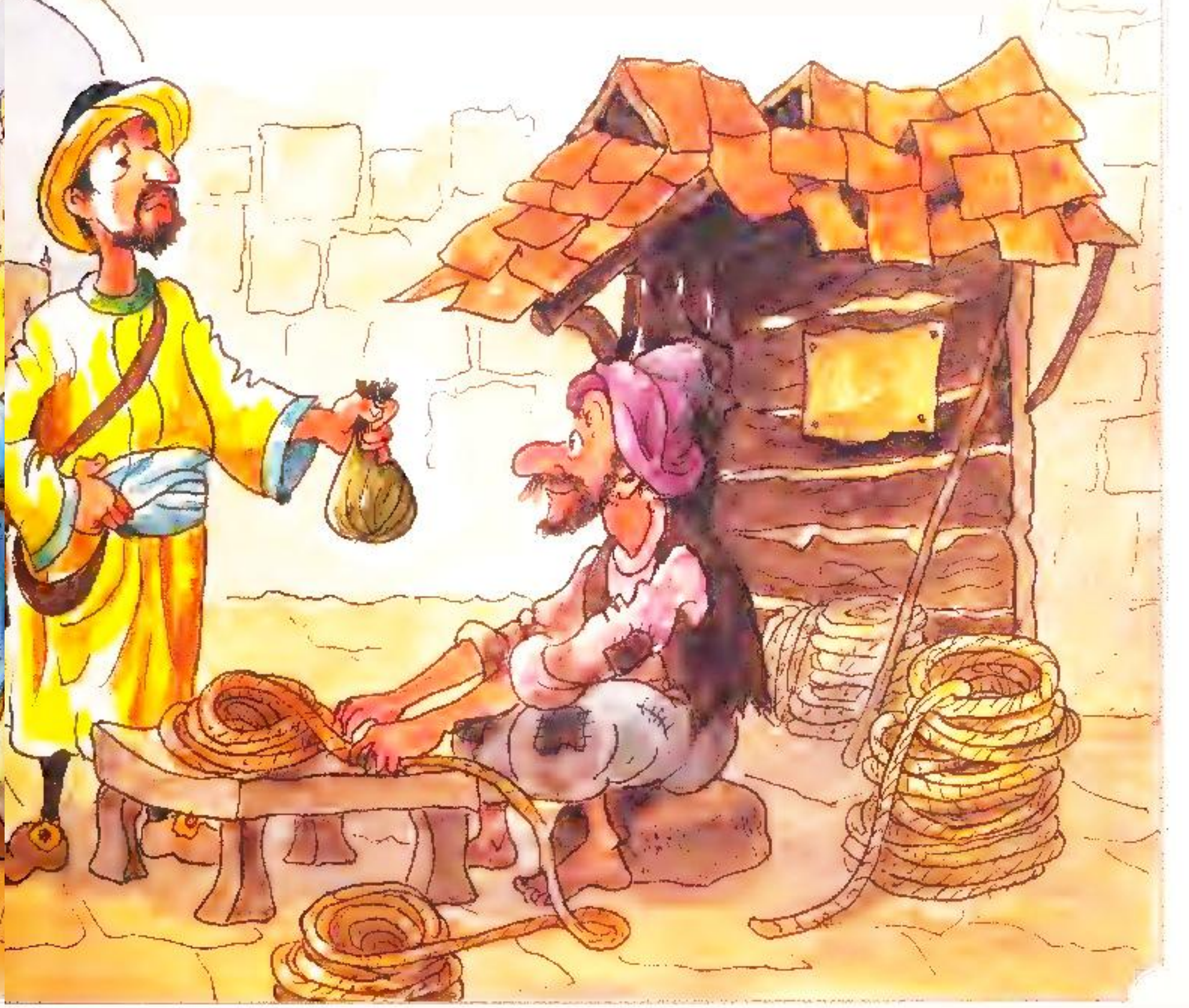

मैं, ज़ाहिर है, बहुत खुश था. पहले मैंने दस सिक्के निकाले जिनसे अपने परिवार के लिए थोड़ा मांस खरीदा, और फिर बाकी 190 सिक्कों को सावधानी से अपनी पगड़ी में लपेट लिया. हालाँकि, जैसे ही मैं मांस घर ले जा रहा था, अचानक एक...

... क्या आप विश्वास करेंगे, एक विशाल गिद्ध ने मुझ पर हमला कर दिया, जो मांस के पीछे था. उस विशाल पक्षी से लड़ते हुए, मेरी पगड़ी ज़मीन पर गिर गई. गिद्ध ने मांस छोड़ दिया, मेरी पगड़ी और उसमें रखा सारा पैसा छीन लिया, और उड़ गया!

महाराज, आप कल्पना कर सकते हैं, अहमद ने आगे कहा, मैं इतना सारा पैसा गँवाकर और उसे एक गिद्ध द्वारा चुरा लिए जाने से कितना दुखी था! इसके अलावा, अब मैं... एक नई पगड़ी खरीदनी थी, जो मैं खरीद नहीं सकता था. कम-से-कम मेरे पास अभी भी नौ सोने के सिक्के बचे थे, जो कुछ समय के लिए तो काम आ जाते, लेकिन उनके खर्च हो जाने के बाद हम फिर से कंगाल हो जाते.

मेरी पत्नी रोने के अलावा कुछ नहीं कर सकती थी, और मैं खुद चिंतित था कि जब हम फिर मिलेंगे तो सादी से क्या कहूँगा.

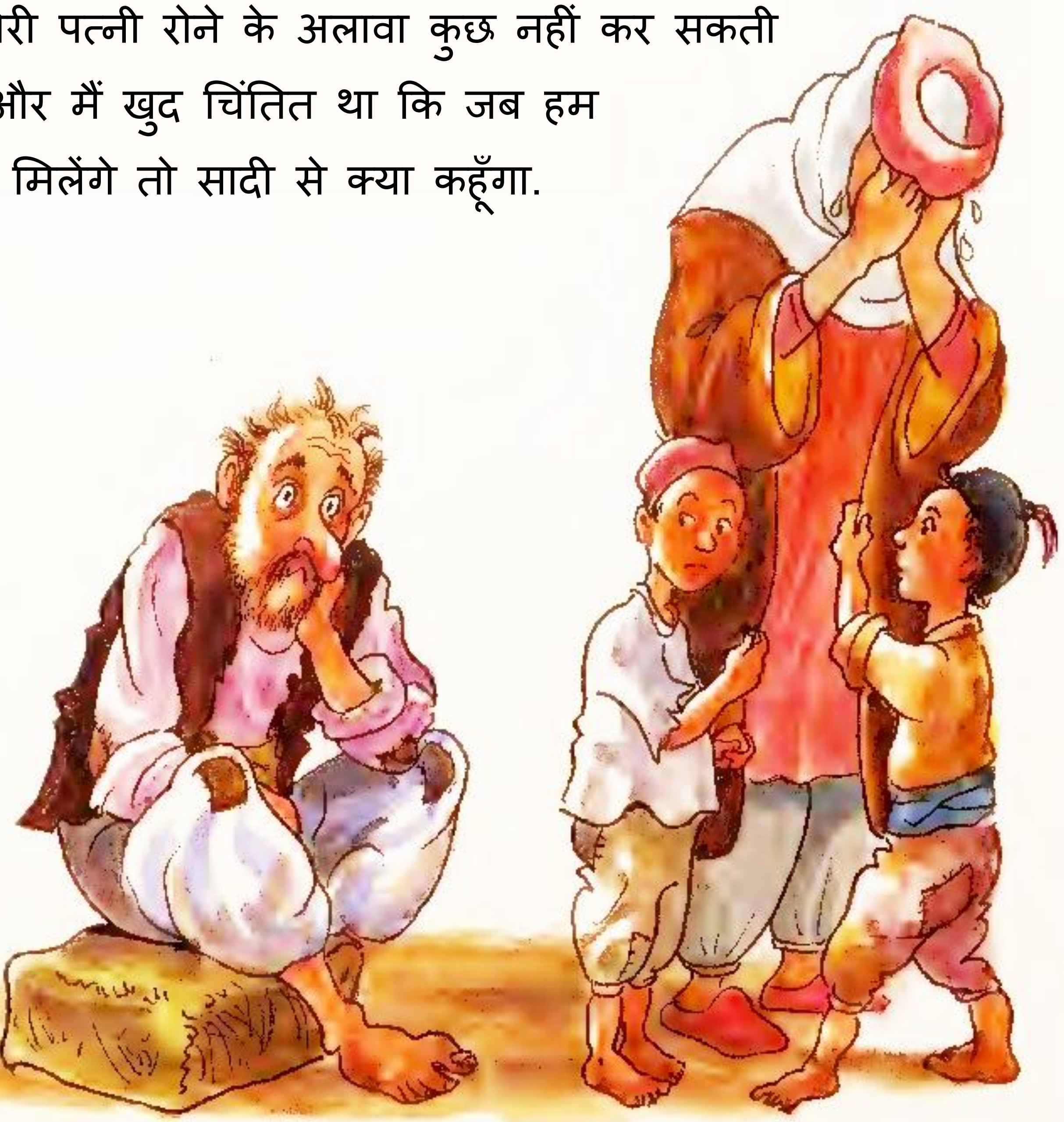

लगभग छह महीने बाद वह दिन आया. सादी ने देखा कि मैं अब भी पहले की तरह ही मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए था, बस मेरी पगड़ी नई थी.

जब मैंने उसे गिद्ध के बारे में बताया, तो उसने कहा कि यह कहानी झूठी है और मेरे आलस्य का बहाना मात्र है. हालाँकि, साद अपने दोस्त को यह यकीन दिलाने में कामयाब रहा कि मैंने सच कहा था, इसलिए सादी ने मुझे 200 सोने के सिक्कों की एक और थैली दी. "इस बार, इन्हें अपनी पगड़ी से ज़्यादा सुरक्षित जगह पर रखना और समझदारी से इस्तेमाल करना."

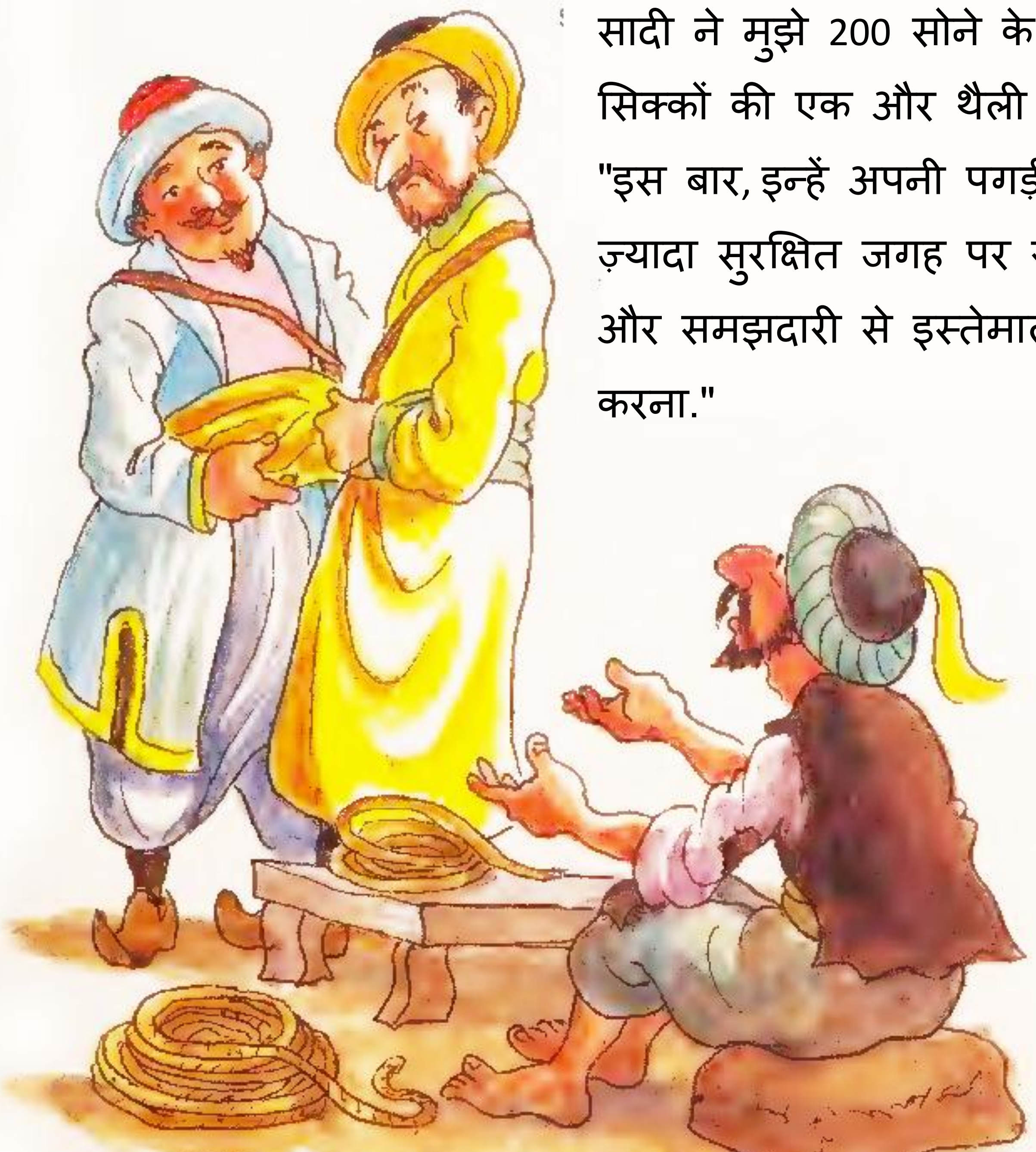

मैं सादी का बहुत आभारी था और मैंने सोने के दस सिक्के निकालकर, बाकी को एक पुराने मिट्टी के बर्तन में, जो हमारे चूल्हे के पास रखा था, आधा चोकर से भरा हुआ, छुपाने का फैसला किया. मैंने सोचा कि यह सुरक्षित रहेगा, क्योंकि किसी को पता नहीं चलेगा. उसके बारे में मैंने अपनी पत्नी तक को नहीं बताया.

फिर मैं अपने काम के लिए थोड़ी सुतली और रात के खाने के लिए कुछ खाना खरीदने बाहर गया.

जब मैं बाहर था, मेरी पत्नी ने गली में एक फेरीवाले की आवाज़ सुनी. पत्नी को सफ़ाई के लिए रेत चाहिए थी, इसलिए उसने दरवाज़ा खोला. लेकिन चूँकि उसके पास पैसे नहीं थे, उसने व्यापारी से पूछा कि क्या वह उसके पुराने बर्तन में रखे चोकर के बदले थोड़ी रेत दे देगा. वह मान गया और उसे एक कटोरे में रेत दे दी, और चोकर समेत बर्तन—और, ज़ाहिर है, उसके नीचे छिपा सोना—अपने साथ ले गया.

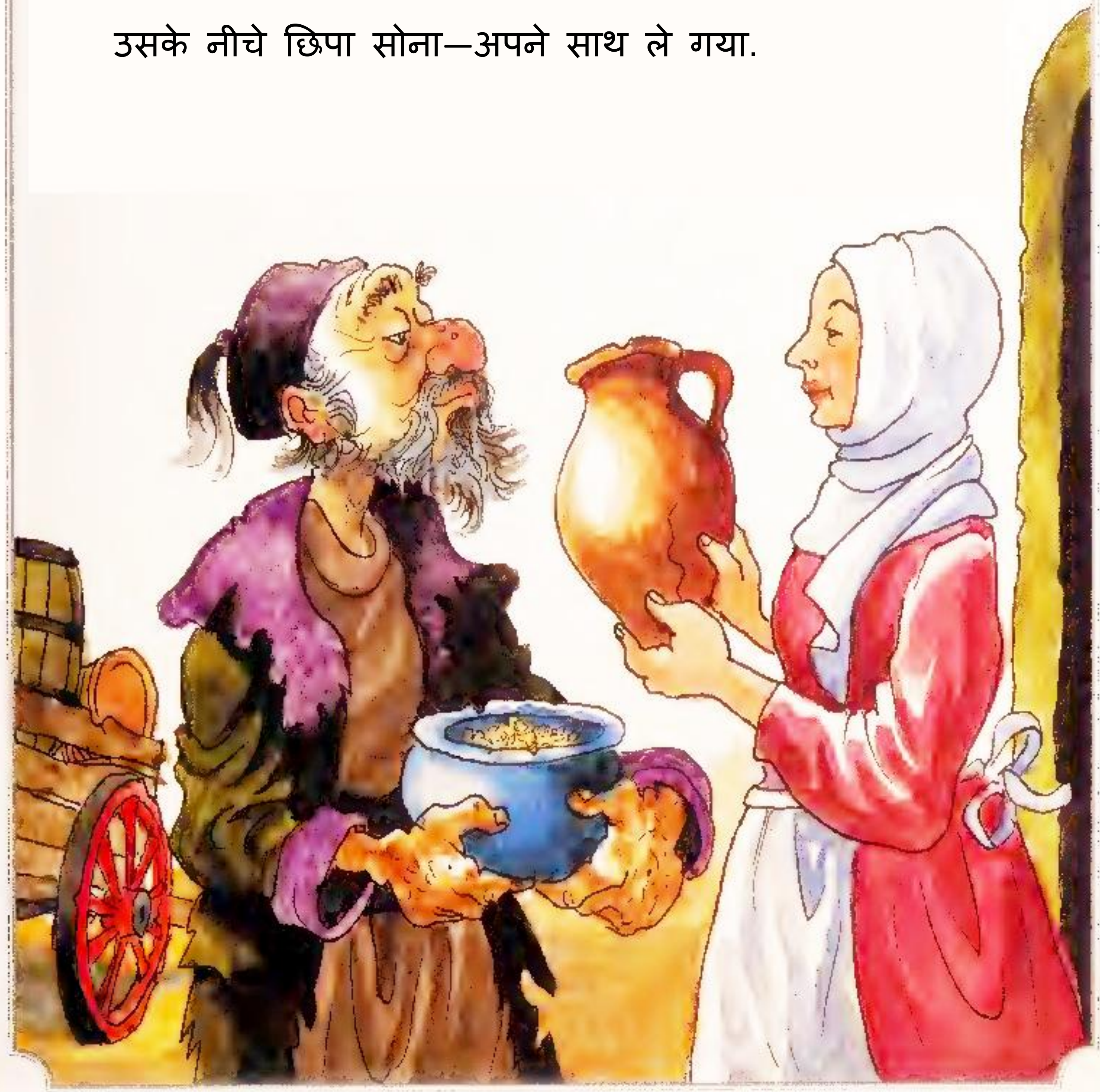

महाराज, अहमद ने आगे कहा, मैं बता नहीं सकता कि इस दूसरी मुसीबत पर मुझे कितना गुस्सा आया, या यूँ कहें कि मेरी पत्नी अपनी लापरवाही पर कितनी फूट-फूट कर रोई. आखिर में हमने एक-दूसरे को यह कहकर दिलासा दी कि हमें सारा सोना गँवाने की बात भूलकर अपनी खुशकिस्मती पर गौर करना चाहिए.

इससे हमें बहुत अच्छा लगा, लेकिन बस एक ही बात थी: अगली बार जब हम मिलेंगे तो मैं सादी से आँखें कैसे मिला पाऊंगा?

आखिरकार जब हम मिले, तो मैं शर्म से भर गया जब मैंने उसे चोकर के बर्तन और रेत के बारे में बताया, लेकिन सादी ने बस आह भरी. "मुझे 400 सोने के सिक्के गँवाने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता," उसने साद की ओर मुड़कर कहा, "लेकिन मैं हार मानता हूँ. अब तुम्हारी बारी है कि तुम साबित करो कि एक गरीब आदमी की दौलत बनाने के और भी तरीके हैं."

तो साद ने मुझे सीसे का एक टुकड़ा दिखाते हुए कहा, "यह मुझे अभी नाली में मिला है." इसे ले लो, अहमद, और देखो कि इससे तुम्हें कोई फायदा होता है या नहीं."

मैं इसे घर ले आया और इसके बारे में और कुछ नहीं सोचा. तभी एक शाम मेरा एक मछुआरा पड़ोसी यह पूछने आया कि क्या मेरे पास उसके जाल में वज़न डालने के लिए थोड़ा सीसा था. "वरना, मैं आज रात मछली पकड़ने नहीं जा सकता," उसने कहा.

मैंने खुशी-खुशी उसे साद का सीसा का टुकड़ा दे दिया, और मेरे पड़ोसी ने धन्यवाद के तौर पर मुझे अपने जाल की पहली ही कोशिश में पकड़ी हुई मछली देने का वादा किया.

अगले दिन वह मेरे लिए एक मछली लाया. उसकी पहली कोशिश में यह अकेली मछली थी, लेकिन वो बड़ी थी.

उस शाम जब मेरी पत्नी ने इसे काटा, तो उसे उसमें एक बड़ा, चमकता हुआ हीरा मिला, जिसे उसने—और कुछ नहीं जानते हुए—काँच का टुकड़ा समझ लिया.

उसने इसे बच्चों को खेलने के लिए दे दिया, और यह इतनी चमकीला था कि बच्चे उसे पकड़ने के लिए आपस में झगड़ने लगे, जिससे इतना शोर हुआ कि पड़ोसियों को परेशानी हुई.

सड़क के उस पार रहने वाले एक अमीर जौहरी की पत्नी शिकायत करने आई. मेरी पत्नी बेशक, मैंने भी माफ़ी मांगी और उसे वह काँच का टुकड़ा दिखाया जिसकी वजह से सारा शोर हो रहा था. महिला ने तुरंत पहचान लिया कि वह हीरा था, लेकिन उसने ऐसा कहा नहीं. उसने कहा कि यह इतना सुंदर है कि वह इसे तीस या चालीस सोने के सिक्कों में खरीदना चाहेगी. घर पहुँचते ही यह सुनकर मुझे एहसास हुआ कि यह ज़रूर कोई कीमती हीरा होगा.

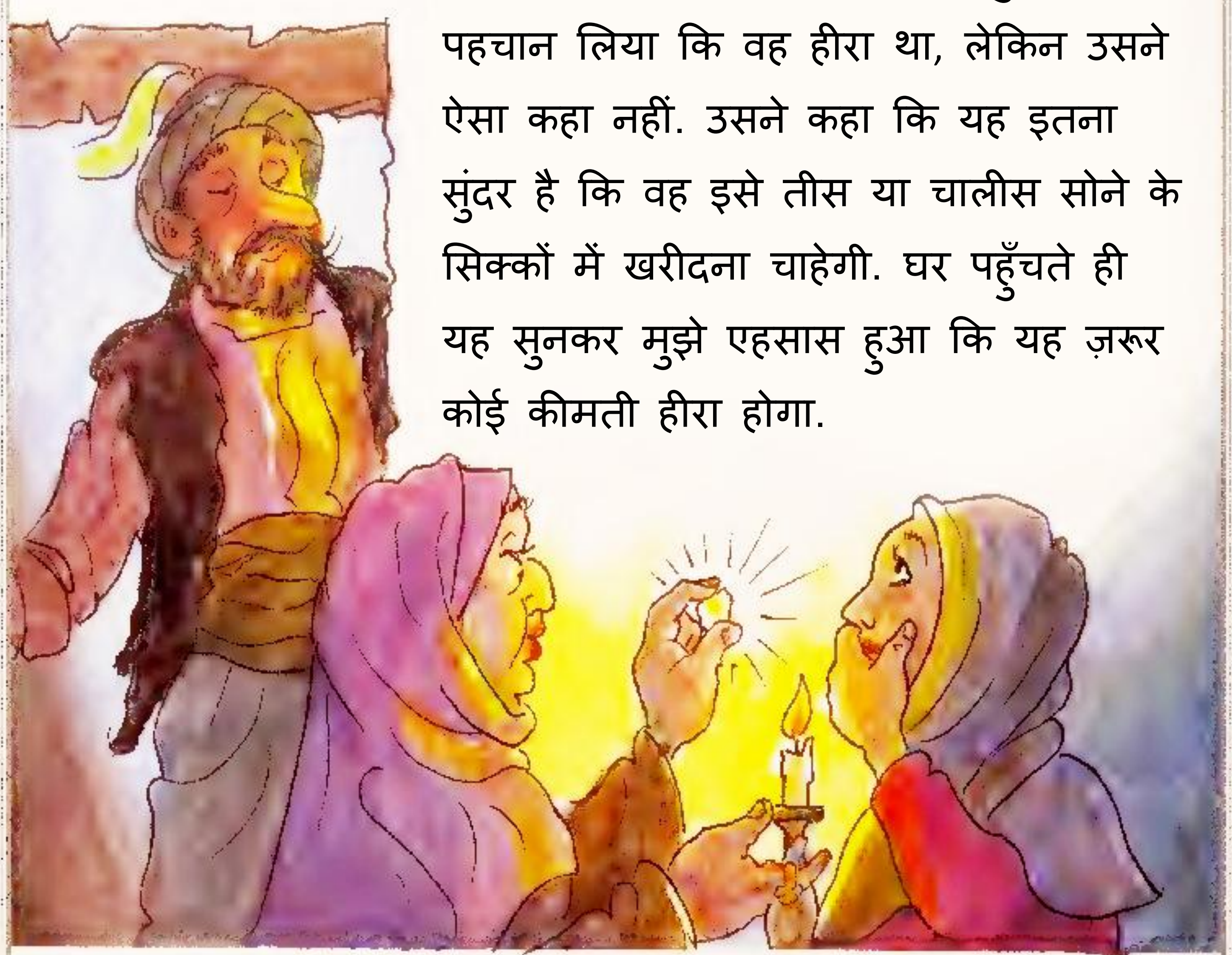

"कृपया अपने पति से कहिए," मैंने कहा, "कि इसकी कीमत एक लाख सोने के सिक्के हैं." मैंने सोचा, "किस्मत का क्या पता."

अगली सुबह जब जौहरी खुद आया, तो उसने चुपचाप प्रशंसा से चमकते हीरे को देखा, लेकिन फिर भी, वह मोलभाव करना चाहता था. मैंने उससे कहा, "मैं अपनी कीमत बताने पर अड़ा रहा, वरना मैं इसे किसी और जौहरी को बेंच दूँगा."

"नहीं, नहीं!" वह चिल्लाया, और जल्द ही वह एक विशाल ठेले को धकेलता हुआ वापस लौट आया, जिसमें थैलियों में भरे एक लाख सोने के सिक्के लदे थे.

मैंने उसे हीरा दे दिया, और मैं अपने सबसे बड़े सपने से भी ज़्यादा अमीर हो गया.

खैर, महाराज, अहमद ने आगे कहा, "मैं... मैं साद और सादी के पास अपनी कृतज्ञता प्रकट करने गया, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वे कहाँ रहते थे.

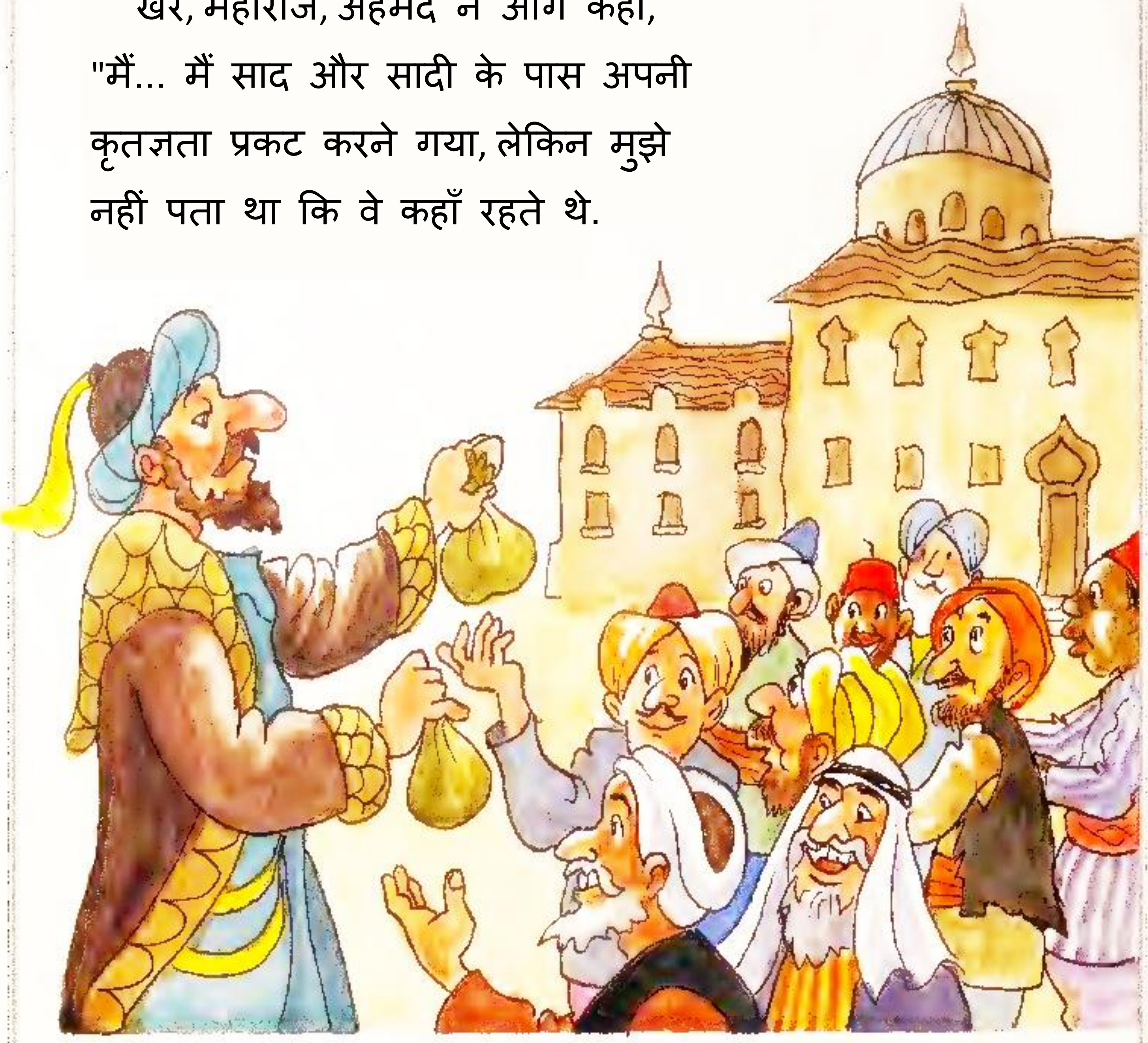

इसके बजाय, मैंने अपना भविष्य संवारना शुरू कर दिया. मैंने अपने सभी साथी रस्सी बनाने वालों से कहा कि अब वे मेरे लिए काम करें और उन्हें पहले ही मज़दूरी दे दी. फिर मैंने बगदाद में सुतली और तैयार रस्सियों को रखने के लिए गोदाम किराए पर लिए, जिन्हें हम बड़ी मात्रा में बनाते और मुनाफे पर बेचते थे.

फिर मैंने वह हवेली बनवाई जिसे महाराज ने कल देखा था, अपने कामगारों के रहने और अपना सामान रखने के लिए, और अपने परिवार के लिए एक कमरा भी बनवाया.

और वहीं एक दिन मैं फिर साद और सादी से मिला, जब वे उस भव्य नए घर को देखने आए थे जिसके बारे में उन्होंने सुना था, जो रस्सी बनाने वाले व्यापारी अहमद का था.

मैंने अपने उपकारों का कृतज्ञता और खुले दिल से स्वागत किया, और उन्हें अपनी कहानी सुनाई.

वे मेरे सौभाग्य के बारे में जानकर बहुत खुश हुए, हालाँकि सादी अभी भी यह नहीं समझ पाए थे कि मैंने अपनी पगड़ी और चोकर के बर्तन के खो जाने के बारे में झूठ क्यों बोला था—जैसा कि उन्होंने सोचा था. लेकिन साद ने मेरी हर बात पर विश्वास किया.

बेशक, मैंने अच्छे खाने, मधुर संगीत और बातचीत से उनका भरपूर स्वागत किया. "मेरे दोस्तों," मैंने कहा, "क्यों न आप रात यहीं रुकें, और सुबह हम नदी के किनारे मेरे देहाती घर को देखने चलें."

वे खुशी-खुशी मान गए.

हम मेरी नाव में सवार होकर खूबसूरत नज़ारों से गुज़रे, और जब हम पहुँचे तो मेरे मेहमान मेरे घर और बगीचों से, और मेरी पत्नी और बच्चों से मिलकर बहुत प्रभावित हुए.

दोपहर के भोजन के बाद, जब हम बरामदे में आराम कर रहे थे, मेरा बड़ा बेटा दौड़ता हुआ अंदर आया. "पिताजी, इस अजीब से घोंसले को देखिए जो मुझे उस पेड़ पर मिला है जहाँ गिद्ध बैठते हैं."

महाराज, अहमद ने समझाया, वो कोई घोंसला नहीं था, बल्कि मेरी पुरानी पगड़ी थी—वही पगड़ी जो गिद्ध चुरा ले गया था, और उससे भी बढ़कर, हमें 190 सोने के सिक्के अभी भी कपड़े की तह में मिले!

सादी ने मेरी बातों पर शक करने के लिए तुरंत माफ़ी मांगी, लेकिन उसने स्वीकार किया कि उसे चोकर वाली मेरी कहानी पर अब भी यकीन नहीं हो रहा था.

खैर, उस शाम जब हम बगदाद वापस लौटे, तो हमने पाया कि हमारे घोड़ों के लिए चोकर खत्म हो गया था. अनाज के भंडार बंद थे, और हमारे नौकर को कबाड़ की दुकान में बस एक पुराने मिट्टी के बर्तन में थोड़ा सा चोकर ही मिला.

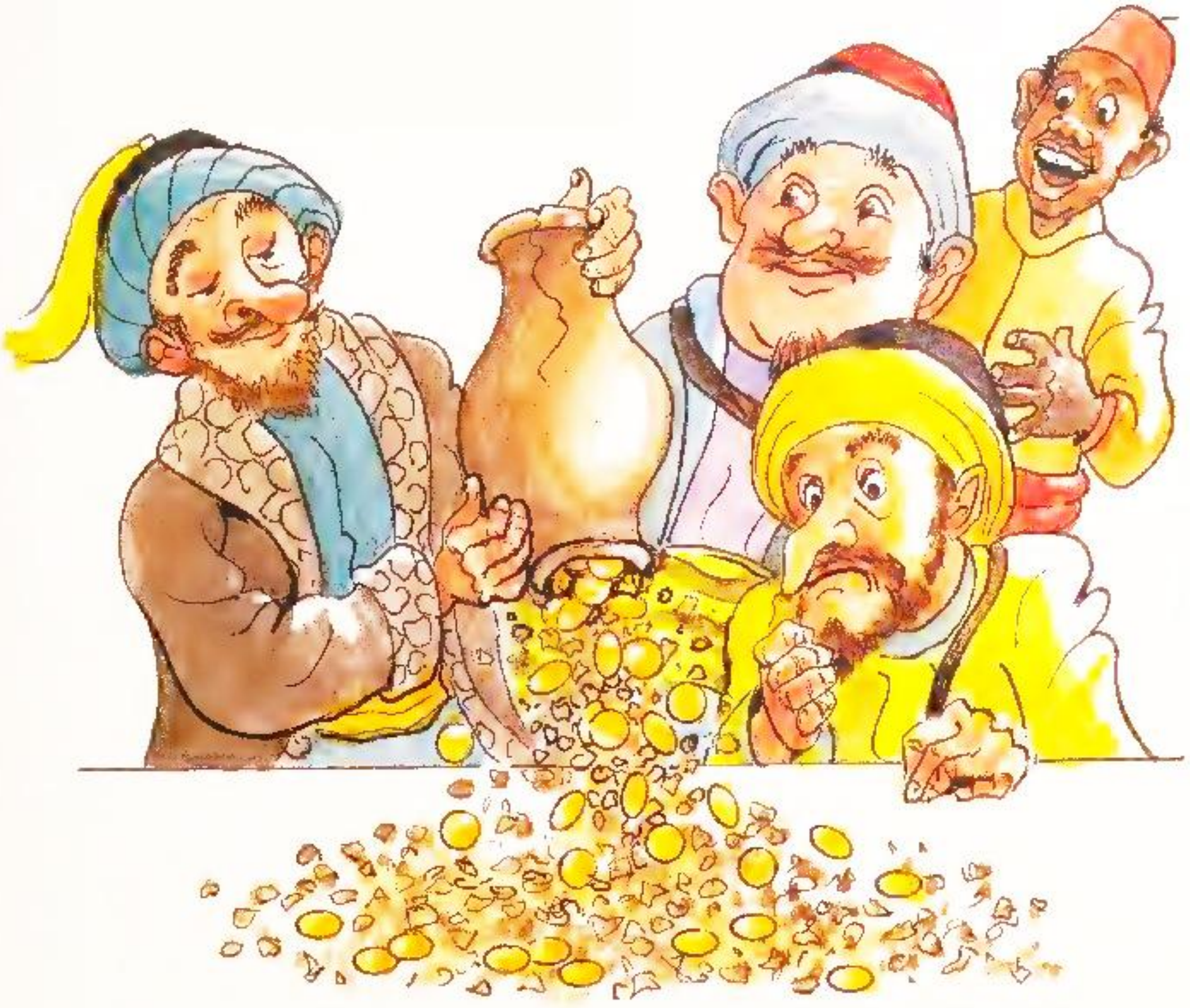

मानो या न मानो, अहमद ने अपनी कहानी खत्म करते हुए कहा, वो मेरा पुराना बर्तन था! और 190 सोने के सिक्के अभी भी वहीं, चोकर के नीचे छिपे थे.

खलीफा ने अहमद को उसकी सबसे मनोरंजक कहानी के लिए धन्यवाद दिया. "क्या तुम यकीन करोगे कि जौहरी से वह शानदार हीरा मैंने ही खरीदा था!" वह मुस्कुराया और फिर उसने एक पल सोचा. "अगर तुम मुझे अपनी पुरानी पगड़ी और वो मिट्टी का चोकर का बर्तन बेच दो, तो मैं उन सबको अपने महल में एक साथ प्रदर्शित करूँगा, ताकि हर कोई तुम्हारी कहानी का आनंद ले सके और उससे कुछ सीख सके."

अहमद खुशी-खुशी मान गया.

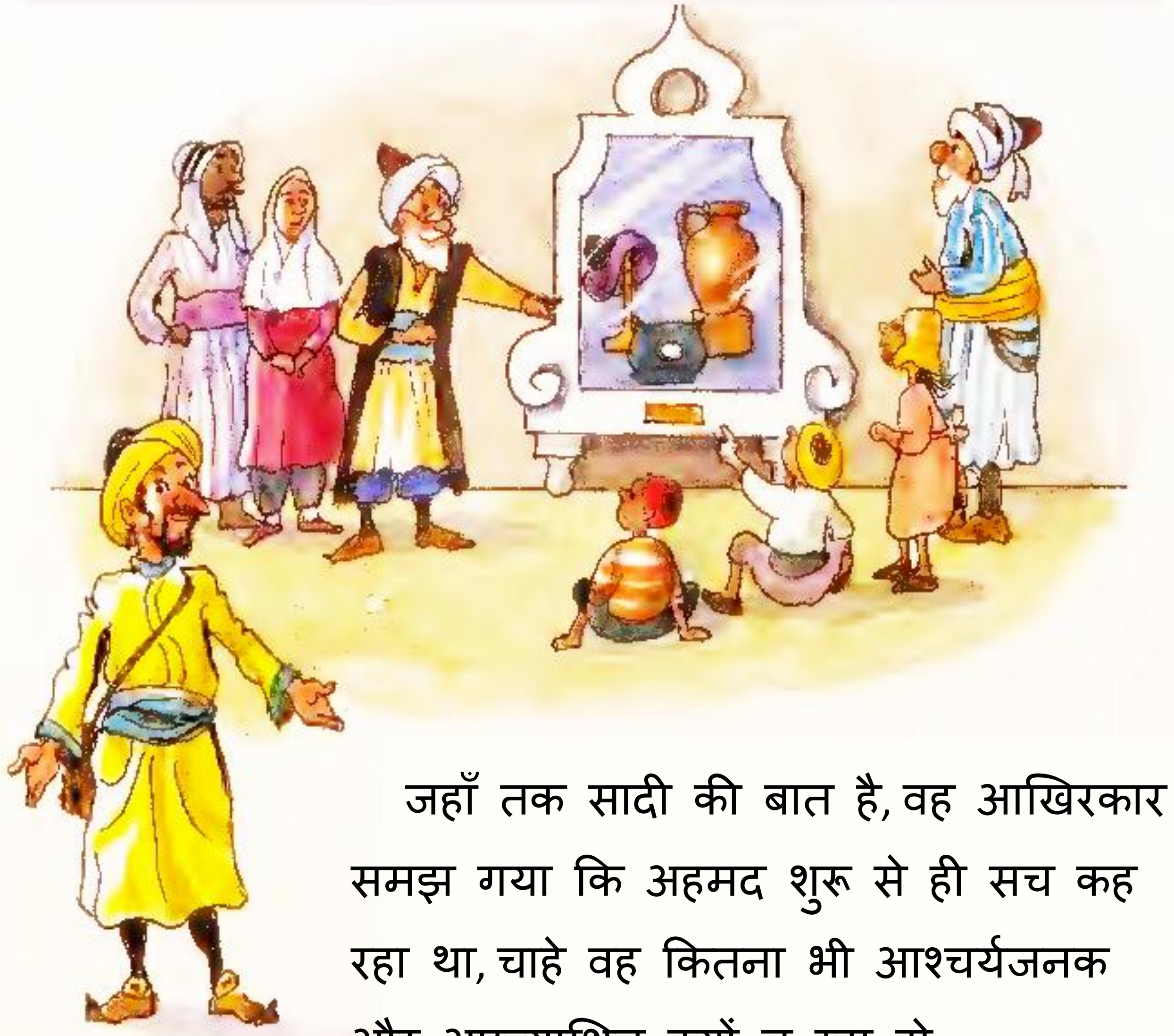

जहाँ तक सादी की बात है, वह आखिरकार समझ गया कि अहमद शुरू से ही सच कह रहा था, चाहे वह कितना भी आश्चर्यजनक और अप्रत्याशित क्यों न रहा हो.

समाप्त